कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

अक्षर से है शब्द बना, शब्द है ब्रह्मस्वरुप,
साक्षरता वरदान है, ज्ञान ही है चिद्रूप।
साक्षरता अभियान का, परम लक्ष्य है ज्ञान,
अक्षर में शंकर बसे, दूर करे अज्ञान।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 28, अंक 2
अप्रेल-जून 2017 (विक्रम संवत् 2074)

सम्पादक
स्नेहलता बैद

–सम्पादन सहयोग–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला,
गुलमोहर पार्क के पास
हावड़ा - 1, दूरभाष-2666–2425

–प्रकाशक–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, on behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata-700 007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata-700 005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय 2
- ईसाई मतांतरण की… 3
- इंजीनियर्स जुड़ते गए… 4
- अरुणाचल विकास परिषद… 6
- सालबाड़ी केन्द्र में सामूहिक विवाह… 7
- हर्षोल्लास से मनाया गया… 8
- वनवासी कल्याण आश्रम, अंदमान द्वारा… 9
- सुन्दरवन में निर्माण कार्य प्रगति पर 10
- युवा समिति द्वारा वृक्षारोपण 10
- GST विषय पर विचार गोष्ठी 10
- इनरव्हील क्लब द्वारा प्रान्त महिला प्रमुख… 11
- युवा समिति का साक्षरता अभियान 11
- सिलाई प्रशिक्षण : स्वावलम्बन की… 12
- रांची में शुरु हुआ जनजाति विधिक… 13
- निबंध प्रतियोगिता में रायपुर की… 13
- योजना बैठक सम्पन्न 13
- शोक संवाद 14
- संत ईश्वर सेवा सम्मान हेरिटेज फाउंडेशन… 14
- वनवासी कल्याण आश्रम को आदिवासी… 14
- बोधकथा … बगुला भगत 15
- कविता …. संकल्प तो करो 15
- अनुकरणीय 16
- ग्राम विकास का संकल्प 16

संपादकीय.....

वनवासी के विकास से ही भारत का विकास संभव है

देश इस वर्ष पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शताब्दी वर्ष मना रहा है। दीनदयालजी राष्ट्र के गिने-चुने नेताओं में थे जो जनता की निष्काम सेवा और आडम्बरहीनता के लिए विख्यात थे। उनका पूरा जीवन राष्ट्र को समर्पित रहा।

विलक्षण संगठक के साथ-साथ श्रेष्ठ व मौलिक विचारक का मणिकांचन योग उनके व्यक्तित्व में था। पूंजीवाद और साम्यवाद के विकल्प के रूप में एकात्म मानववाद का अभिनव विचार दीनदयालजी की तीक्ष्ण मेधा का परिणाम था। उन्होने अपने छोटे से जीवनकाल में देश और दुनिया को एकात्म मानववाद का ऐसा सूत्र दिया जो आज पूरे विश्व में सर्वमान्य हो गया है। यह सूत्र था मनुष्य को टुकड़ों में बांटकर नहीं, उसे सम्पूर्ण मानव के रूप में देखना। उसके शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समग्र चिंतन करना। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को एकात्मभाव से देखना। सभी पंचभूतों-आकाश, धरती, जल, वायु, अग्नि सबके संबंधों का सामंजस्यपूर्ण भाव से विचार करना तथा उसके अनुरूप व्यवहार करना। प्रकृति के प्रति सम्मान का भाव रखना तथा उसका संवर्धन करना। पंडितजी का मानना था कि जिस तरह मनुष्य की आत्मा होती है, उसी तरह देश की आत्मा भी होती है। उसे उन्होंने कहा- **चिति**। वे मानते थे कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। गांववासी ही देश की **चिति** का सही प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए देश का विकास करना है तो गांवों का सर्वांगीण विकास करना होगा।

वनवासी के माध्यम से मां भारती को परम वैभव के शिखर पर आरुढ़ करने हेतु संकल्पित हम सब कार्यकर्ताओं के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन प्रेरणा का अक्षय स्रोत है। कालीकट अधिवेशन में दिया गया उनका वक्तव्य आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा - *'आर्थिक योजनाओं तथा प्रगति का माप समाज के ऊपर की सीढ़ी पर पहुँचे व्यक्ति से नहीं, बल्कि सबसे नीचे के स्तर पर विद्यमान व्यक्ति से होगा। आज देश में ऐसे करोड़ों मानव हैं, जो मानव के किसी भी अधिकार का उपभोग नहीं कर पाते। शासन के नियम और व्यवस्थाएँ, योजनाएं और नीतियाँ, प्रशासन का व्यवहार और भावना इनको अपनी परिधि में लेकर नहीं चलती, प्रत्यूत उन्हें मार्ग का रोड़ा ही समझा जाता है। हमारी भावना और सिद्धांत है कि ये मैले-कुचैले, अनपढ़, मूर्ख लोग ही हमारे नारायण हैं। हमें इनकी पूजा करनी है। यह हमारा सामाजिक एवं मानव धर्म है। जिस दिन हम इनको पक्के, सुन्दर, स्वच्छ घर बनाकर देंगे, जिस दिन हम इनके बच्चों और स्त्रियों को शिक्षा और जीवन-दर्शन का ज्ञान देंगे, जिस दिन हम इनके हाथ और पाँव की बिवाइयों को भरेंगे और जिस दिन इनको उद्योग धंधों की शिक्षा देकर इनकी आय को ऊँचा उठा देंगे, उस दिन हमारा भातृभाव व्यक्त होगा। ग्रामों में जहाँ विकास की किरणें नहीं पहुंची, माता और पिता अपने बच्चों के भविष्य को बनाने में असमर्थ हैं, वहाँ जब तक हम आशा और पुरुषार्थ का संदेश नहीं पहुँचा पाएँगे, तब तक हम राष्ट्र के चैतन्य को जागृत नहीं कर सकेंगे। हमारी श्रद्धा का केन्द्र आराध्य और उपास्य, हमारे पराक्रम और प्रयत्न का उपकरण तथा उपलब्धियों का मानदण्ड वह मानव होगा जो आज शब्दश:अनिकेत और अपरिग्रही है।'*

अब समय आ गया है कि इस महामानव को शब्दों के माध्यम से नहीं बल्कि उनके पदचिन्हों पर चलकर श्रद्धा सुमन अर्पित करें। मार्ग कठिन है तथा चुनौतियाँ और बांधाएं अनन्त और अपार। 11 करोड़ वनवासी समाज के प्रति आत्मीयता एवं संवेदनशीलता के साथ हमें कर्मक्षेत्र में अनवरत चलते ही रहना है। इति शुभम्।

- स्नेहलता बैद

ईसाई मतांतरण की सुनामी का शिकार अरुणाचल प्रदेश

- राजेन्द्र चड्ढा

अरुणाचल नाम से ही स्पष्ट है यह सूर्योदय का अंचल यानि सूर्य का प्रदेश है। देश के पूर्वोत्तर पर्वतीय प्रदेश को अरुणाचल कहना सटीक ही है। भारत में पहली रवि रश्मि इसी प्रदेश में प्रवेश करती है, तभी इसे अरुणाचल कहा जाता है। प्राचीन काल से ही यहाँ भगवान शिव, (जिन्हें यहाँ डांगरिया बाबा कहते है) की काफी मान्यता रही है और यही कारण है कि पूरे प्रदेश में शिवालय मिलते हैं। जबकि तिब्बत से लगे तवांग, बोमडिला क्षेत्र में रहने वाले नागरिकों में बौद्ध मत की महायान शाखा तथा म्यांमार से लगे लोहित क्षेत्र में हीनयान शाखा की मान्यता है। ऐसे ही, तिरप जिला में रहने वाली नौटके जनजाति वैष्णव सम्प्रदाय को मानती है। अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम में स्थित तवांग और वेस्ट कमेंग जिलों में महायानी बौद्ध धर्मावलंबी जनजातियाँ मोम्पा और शेर दुक्पेन रहती हैं। अरुणाचल प्रदेश में ईसाईकरण की गति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 50 वर्षों में ईसाई जनसंख्या ढाई सौ गुना बढ़ी है। केवल ईसाई ही नहीं, इसी समयावधि में प्रदेश में मुस्लिम जनसंख्या भी लगभग 27 गुना बढ़ी है जबकि हिन्दुओं की जनसंख्या केवल 15 गुना बढ़ी है। अंग्रेजी उपन्यासकार चार्ल्स डिकेन्स ने इसी तथ्य को रेखांकित करते हुए लिखा है कि ईसाई पंथ प्रचारक अत्यंत कुत्सित प्राणी है। वे जहाँ भी जाते हैं उस स्थान को पहले की तुलना में कहीं अधिक निष्कृष्ट बना देते हैं। अब कड़वा सच यह है कि अरुणाचल में ईसाई पंथ के खुले प्रचार-प्रसार से आबादी के एक बड़े हिस्से का मतांतरण हुआ है। पूर्वोत्तर राज्यों में अरुणाचल प्रदेश अभी तक एक ऐसा राज्य था जहां मतांतरण का प्रभाव अधिक नहीं था परंतु अब यह 'बीमारी' यहां भी लग चुकी है। पश्चिम की भौतिकवादी सभ्यता की ओर नवयुवकों का रुझान दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। विदेशी ईसाई मिशनरियों ने प्रदेश के पिछड़े इलाकों में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम तो किया पर दाम मतांतरण के नाम पर वसूला। इतिहासकार एच-वाल्टर का मत रहा है कि ये (मिशन) स्कूल वास्तव में धर्मांतरण के लिए लोगों को फंसाने के केन्द्र हैं। इसके कारण उस काल में साक्षरता स्तर में शायद ही कुछ सुधार हुआ हो। अरुणाचल में वर्ष 1961 में हिन्दू जनसंख्या ईसाई जनसंख्या के लगभग 15 गुना अधिक थी किन्तु हालात इस तेजी से बदले या बिगड़े हैं कि केवल पांच दशकों में ही ईसाई जनसंख्या, हिन्दू जनसंख्या से अधिक हो गई। इतना ही नहीं, राज्य में 1961 से 2011 के मध्य ईसाई समुदाय का कुल जनसंख्या में अनुपात में परिवर्तन भी आश्चर्य में डालने वाला है। वर्ष 1961 में ईसाई जनसंख्या का कुल जनसंख्या में अनुपात 0.5 प्रतिशत था जो 2011 में बढ़कर 30.3 प्रतिशत हो गया। ईसाई मतांतरण पर रिपोर्ट बनाने वाले न्यायाधीश डॉ. एस. पी. नियोगी ने चेतावनी दी थी कि मतांतरित व्यक्ति की मतांतरण के कारण अपने समाज के साथ एकता और भावात्मक घनिष्ठता धूमिल हो जाती है, अत: यह संकट उत्पन्न हो जाता है कि अपने देश और राज्य के प्रति उसकी निष्ठा का ह्रास हो जाएगा। यही भावना अरुणाचल प्रदेश में दृष्टिगोचर हो रही है। ■

(पाथेय कण से साभार)

इंजीनियर्स जुड़ते गए...कारवां बनता गया!

- महेश काले, नासिक

अपने देश के विकास में अभियंताओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण रही है। विकास का कोई भी पहलू अगर हम सामने लाते हैं तो उसमें अभियंताओं का योगदान तो होता ही है। लाखों की संख्या में प्रशिक्षित इस देश के अभियंता, चाहे वे इंजीनियरिंग की किसी भी शाखा से शिक्षा प्राप्त हो, इनका स्थान रीढ़ की हड्डी के समान है। देश के हर छोटे-बड़े नगरों में हजारों की संख्या में अभियंता अपना काम तो निष्ठापूर्वक कर रहे हैं। लेकिन इससे ज्यादा काम करने की इन अभियंताओं की क्षमता है। एक अद्‌भुत कल्पना शक्ति इनमें बसी हुई है। इसी क्षमता और कल्पनाशक्ति को एक दिशा दर्शन करने की सिर्फ आवश्यकता है। इन सभी अभियंताओं को योग्य दिशा दर्शन करके उनमें बसी सामाजिक संवेदनशीलता को जागृत कर उनको सामाजिक कार्य से जोड़ा गया तो सामाजिक क्षेत्र में एक बड़ा परिवर्तन आ सकता है। ऐसा ही एक सफल प्रयास महाराष्ट्र के नासिक महानगर में हुआ है। वनवासी कल्याण आश्रम के माध्यम से लगभग 100 अभियंताओं ने एकत्रित होकर जनजाति क्षेत्र में विकास के जो विभिन्न कार्य प्रारंभ किए हैं, वह देश के केवल सामाजिक क्षेत्र के लिए ही नहीं अपितु सारे इंजीनियरिंग क्षेत्र के लिए एक दिशादर्शक कहे जा सकते हैं।

नासिक महानगर में कार्यरत वनवासी कल्याण आश्रम के एक वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री प्रमोद कुलकर्णी जो व्यवसाय से स्वयं एक स्ट्रक्चरल इंजीनियर हैं, उन्होंने सात-आठ साल पहले अपने व्यवसाय के संबंध में संपर्क में आए हुए प्रमुख रूप से सिविल इंजीनियर्स को सामाजिक कार्य के लिए प्रोत्साहित करने के विविध प्रयास करने प्रारंभ किए। छोटा-मोटा काम सौंपना, कल्याण आश्रम के केन्द्र दिखाने हेतु जनजाति क्षेत्र का दर्शन कराना, कल्याण आश्रम के अधिकारियों से परिचय कराना, जनजाति समाज की समस्याओं के बारे में चर्चा करना, हफ्ते में चार-पांच इंजीनियर्स का आपस में एकत्र होना, ऐसे प्रयास शुरू हुए। दीर्घकाल तक चले इस प्रयास का अंत इस निर्णय से हुआ कि जनजाति समाज से सीधा संपर्क प्रस्थापित करने के लिए वहां की मूलभूत समस्याओं को प्रत्यक्ष सुलझाने के प्रयास हमें करने होंगे। तो सामने आई जनजाति क्षेत्र की पानी जैसी मूलभूत समस्या। वैसे देखा जाए तो पानी केवल जनजाति समाज की समस्या नहीं, इस समस्या ने तो सारे विश्व की नींद हराम कर दी है। लेकिन जनजाति क्षेत्र में इस समस्या की तरफ काफी उपेक्षा से देखा जाता है। इसीलिए पानी का विषय हाथ में लेने का विचार इन इंजीनियर कार्यकर्ताओं ने किया। अपने इस कार्य की प्रयोगभूमि के लिए उन्होंने चुनाव किया नासिक जिले के पेठ तहसील से सटा हुआ एक जनजाति क्षेत्र। इस क्षेत्र में रानविहीर, केलविहीर, सादडपाडा, कलमपाडा, लव्हाली इन जनजाति गांवों में विकास के विभिन्न कार्य प्रारंभ करने का निर्णय हुआ।

सबसे पहले इन सभी गांवों का विस्तृत सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण के कारण जनजाति समाज की वास्तविक स्थिति की जानकारी कार्यकर्ताओं को प्राप्त होने में काफी मदद हुई। महाराष्ट्र के जनजाति क्षेत्र में आम का उत्पादन बड़ी मात्रा में होता है। उनको आम लगाने का शास्त्रशुद्ध प्रशिक्षण और आम की अच्छी-अच्छी प्रजातियों की जानकारी मिले इसलिए यहां के वन बंधुओं के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इसके साथ बांस, चावल, ग्लिरिसिडिया लगाने के बारे में भी कृषि विशेषज्ञ द्वारा मार्गदर्शन किया गया। महिला कार्यकर्ताओं ने यहां की महिलाओं को इकट्ठा करके

उनके स्वयं सहायता समूह बनाए। कुछ महिलाओं को नासिक में सिलाई का प्रशिक्षण देकर आर्थिक दृष्टि से उनको स्वावलम्बी बनाने के प्रयास किए गए। महिलाओं का स्वास्थ्य अच्छा रहे इसके भी प्रयास हुए। नासिक के आयुर्वेद सेवा संघ द्वारा महीने में एक बार स्वास्थ्य केन्द्र चलाकर गांव का युवा स्वावलम्बी हो, इसलिए कुछ युवाओं को मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण दिया गया। जिनमें से कुछ युवक आज गुजरात में जाकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहे हैं।

इस तरह से विभिन्न सेवा कार्य करने के बाद और इन सभी कार्यों में ग्रामवासियों का उत्साहवर्धक सहयोग देखकर इंजीनियर कार्यकर्ताओं का उत्साह भी काफी बढ़ गया। इस कार्य में अनेक नये इंजीनियर्स भी जुड़ने लगे। देखते-देखते 60 से 65 लोगों का एक अच्छा समूह बन गया। गांव की समस्याओं को ध्यान में रखकर कार्यकर्ताओं ने प्रयास तो किए, लेकिन 4-5 साल कार्य करने के बाद भी गाँव के लोगों का स्थलांतरण वैसे ही कायम है, यह बात कार्यकर्ताओं के ध्यान में आई। इस विषय पर जब उन्होंने स्थानीय लोगों से विचार विमर्श किया तो इस समस्या का मूल कारण पानी की कमी यह एक है ऐसा उनको पता चला। गांव के लोगों को साल भर पर्याप्त पानी जब उपलब्ध नहीं होगा तब तक स्थलांतरण ऐसे ही चलता रहेगा यह बात इनको महसूस हुई। तब पानी की समस्या सुलझाने के प्रयास उन्होंने प्रारंभ किए। कुछ इंजीनियर्स ने इस क्षेत्र के पानी के विभिन्न स्त्रोतों का अध्ययन किया। कलमपाडा गांव में एक समूह ने ग्रामस्थों के साथ मिलकर सीमेंट और बोल्डर्स का एक पक्का बांध बनाया। नासिक की महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा कंपनी ने इस बांध के लिए लगभग 6 लाख रुपये की धनराशि दी। इस बांध में इस बारिश में पानी रुकने के कारण स्थानीय लोगों का उत्साह बढ़ गया है। इन इंजीनियर्स के समूह ने कुछ पुराने बांधों की पुनर्निर्माण की योजना को भी सफल बनाया, जिसके कारण सालों से पड़े हुए इन बांधों की उपयोगिता बढ़ गयी है। कलमपाडा की सफलता देखकर आसपास के गांवों के लोग भी आगे आकर हमारे गांव में भी विकास कार्य करने की मांग कर रहे थे।

इस कार्य को कुछ नये आयाम देने के बारे में कार्यकर्ता विचार कर रहे हैं। निरंतर जनजाति क्षेत्र से संपर्क आपसी और ग्रामवासियों से विचार विमर्श इसके आधार पर इस समूह में इस कार्य में रुचि लेने वाले इंजीनियर सदस्यों की संख्या भी बढ़ रही है और इनके कार्य का दायरा भी विस्तृत हो रहा है। प्रारंभिक काल में सिविल इंजीनियर्स की संख्या इस समूह में काफी नहीं थी, लेकिन आज इस समूह में आई.टी. के साथ सभी शाखाओं के अभियंता जुड़ रहे हैं। आज इस समूह में सदस्यों की संख्या 100 के ऊपर है, महीने में एक बार उनकी नियमित बैठक होती है। इस बैठक में कार्य की योजना और उसके क्रियान्वयन के बारे में आपसी चर्चा होती है। नए सदस्यों का परिचय भी इन्हीं बैठकों में होता है। इन विषयों से संबंधित प्रत्येक विभाग का दायित्व किसी न किसी पर सौंपा जाने के कारण सामूहिकता का भाव इस समूह में सम्मिलित है। सभी सदस्य नि:स्वार्थभाव से इस कार्य में जुटे होने के कारण अपना संपूर्ण कौशल इस सामाजिक कार्य में झोंक देते हैं।

पिछले सात सालों से कार्यरत इस समूह ने सामाजिक संवेदना और शास्त्रशुद्धता का एक संतुलन कायम रखते हुए वनवासी कल्याण आश्रम के कार्य को उद्योग जैसे समाज के एक बड़े क्षेत्र में पहुंचाने का कार्य किया है। *दो चार लोगों द्वारा प्रारंभ किया हुआ यह कार्य आज सैकड़ों अभियंताओं को समाज के प्रति अपने दायित्व का बोध कराने का कार्य प्रभावी ढंग से कर रहा है।*

यह कार्य कल्याण आश्रम का महत्वपूर्ण आधार है। संपूर्ण समाज के लिए एक दिशादर्शक प्रेरणाकार्य में हम इसकी गिनती तो बिना हिचकिचाये कर सकते हैं। ■

अरुणाचल विकास परिषद का कार्यकर्ता सम्मेलन

अरुणाचल विकास परिषद के तीन दिवसीय कार्यकर्ता सम्मेलन के समापन के कार्यक्रम में 30 अप्रैल को प्रान्त के अध्यक्ष मा. तेची गुबीन जी ने उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए 1992 से चल रहे संस्था के कार्य का आलेख सभी के सामने प्रस्तुत किया। संस्था द्वारा चल रहे शिक्षा, स्वास्थ्य के सेवा के कार्य, जनजाति संस्कृति रक्षा के प्रयास एवं प्रतिभा विकास के कार्य के बारे में उपस्थित जनों को जानकारी दी। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री पेमा खांडू उपस्थित थे।

अरुणाचल विकास परिषद के कार्य को इस साल 25 वर्ष पूर्ण हुए। अत: यह वर्ष रजत जयंती वर्ष के रुप में मनाया गया। संस्था के इस कालखण्ड में जिन कार्यकर्ताओं ने समय देकर कार्य को आगे बढ़ाया, ऐसे कार्यकर्ताओं का मुख्यमंत्री के द्वारा सम्मान किया गया। इसमें प्रमुख रुप से संस्था के पूर्व अध्यक्ष श्री नाबम आतुम, श्री प्रतिक पोतुम, संस्थापक सदस्य श्रीमती शांती तासो, श्री ताबा हारे, श्री जतन पुलु, श्रीमती मालो, श्री पानीरामजी, श्री मधुराम पेगू आदि महानुभावों का सम्मान किया गया।

मुख्य अतिथि के रुप में संबोधित करते हुए श्री पेमा खांडू जी ने संस्था के कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए बताया कि अरुणाचल विकास परिषद का कार्य गांव-गांव में फैला है। समाज पर आधारित यह कार्य अरुणाचल की आवश्यकता है। इस कार्य को मैं हृदय से शुभकामना देता हूँ। सम्मेलन के समापन के अवसर पर मुख्य वक्ता के रुप में राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री अतुल जी जोग ने संबोधन में बताया कि संस्था के कार्य को आवश्यकता होती है कार्यकर्ता की। समाज आधारित कार्य ही लंबे समय तक चलता है। समापन में प्रान्त के सचिव श्री ज्ञाती राणा जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री जेरांग जी ने किया।

अरुणाचल विकास परिषद का कार्यकर्ता सम्मेलन 28 से 30 अप्रैल को इटानगर के विवेकानंद केन्द्रीय विद्यालय में सम्पन्न हुआ। शुक्रवार 28 अप्रैल के दिन शाम को सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन में राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्री अतुल जी जोग ने वनवासी कल्याण आश्रम के देश भर में चल रहे कार्य की जानकारी दी। सम्मेलन में विभिन्न सत्रों में संगठन के कार्य की वर्तमान स्थिति, आगामी योजना, जिला सम्मेलनों का आयोजन जैसे विविध विषयों पर चर्चा, चिंतन किया गया। सम्मेलन में सभी जिलों से 221 महिला पुरुष प्रतिनिधि पधारे थे। ■

रायगंज छात्रावास का वार्षिकोत्सव संपन्न

पश्चिम बंगाल के रायगंज स्थित मातंगिनी छात्रावास का वार्षिक उत्सव 26 मार्च को संपन्न हुआ। अखिल भारतीय वनवासी की उत्तरबंग इकाई इस छात्रावास का संचालन करती है। वार्षिक उत्सव को उत्तर दिनाजपुर जिला के सचिव श्री गौरहरि चक्रवर्ती, छात्रावास प्रमुख श्री कल्याण बनर्जी सहित अनेक लोगों ने संबोधित किया। उत्सव में छात्रावास की लड़कियों ने योगासन, सूर्य नमस्कार, गीत और नृत्य के माध्यम से सबका मन मोह लिया। मुख्य वक्ता के रुप में कोलकाता महानगर महिला समिति की मंत्री श्रीमती सीमा रस्तोगी ने आश्रम कार्यों के प्रभाव एवं महत्व पर प्रकाश डाला। ■

कल्याण आश्रम का सकारात्मक प्रयास

सालबाड़ी केन्द्र में सामूहिक विवाह का आयोजन

- कृपा प्रसाद सिंह

वनवासी कल्याण आश्रम, उत्तर बंग इकाई द्वारा 7 मई को आश्रम के सालबाड़ी प्रशिक्षण केन्द्र में सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया।

सिलीगुड़ी के आसपास के 70 ग्रामों के 8000 वनवासी बन्धुओं ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। उरांव व संथाल जनजाति के अलावा अन्य छोटी-छोटी जनजातियों के लोगों का एक अभूतपूर्व कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आश्रम के कार्यकर्ताओं ने एक बड़े पंडाल के अन्तर्गत 101 जोड़ी युवक-युवतियों के लिये विवाह (मंडप) स्थल का निर्माण किया। केले के तने व आम के पत्तों से मंडप को सजाया गया। हवन के लिये वेदी की रचना की गई। प्रत्येक चार पांच जोड़ी के मंडप में एक पुरोहित की व्यवस्था की गई। अक्षत, चन्दन, दूब व आम्रपल्लव से विवाह की धार्मिक प्रक्रियायें पूरी हुई। नवीन जोड़ों से अग्नि के समक्ष फेरे लगवाये गये। मंत्रों का उच्चारण, मंगल पाठ, स्वस्तिवाचन आदि अनुष्ठान मुख्य पुजारी उदयनारायण गोस्वामी ने पूर्ण कराए।

कार्यक्रम का उद्घाटन आश्रम के अ. भा. उपाध्यक्ष श्री कृपाप्रसाद सिंह जी, उद्योगपति श्री संतोष अग्रवाल, सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती गीता देवी गोयल ने भगवान श्रीराम व भारतमाता तथा आश्रम संस्थापक बाला साहब देशपाण्डे के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर किया। श्री राजू मादला, श्री शक्तिपद ठाकुर, श्री आशीष दास, प्रान्त अध्यक्ष सुशील वेरलिया व गोपी कृष्ण अग्रवाल, अनुप मण्डल विश्व हिन्दू परिषद, अनिल उरांव, लखीराम टुडु, सत्यनारायण गोयल, राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के कई अधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति रही। आश्रम के उपाध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में कल्याण आश्रम को संपूर्ण देश में ऐसे कार्यक्रम करने व समाज के लोगों को आगे आकर सहयोग करने की अपील की। भारत के 73 PTG (primitive Tribal group) के लिये इसे एक सकारात्मक प्रयास की संज्ञा दी। ऐसी जनजातियों में युवक युवतियों के परिजन विवाह का खर्च वहन नहीं कर पाते हैं, उन्हें गांव छोड़कर दूसरी जगह शरण लेनी पड़ती है। ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन द्वारा आर्थिक दृष्टि से कमजोर परिवारों के लिये एक बहुत बड़ी सहायता हो जाती है।

8000 रूपये के सामूहिक सहयोग से विवाह की सभी औपचारिकताएं पूरी हो जाती है। नवदम्पति के लिये बिछौना, एक बड़ी संदूक, दैनिक उपयोग की सामग्री, एक महीने भर की भोजन सामग्री, टॉर्च, चूल्हा, व आवश्यक बर्तन की व्यवस्था कल्याण आश्रम सामाजिक सहयोग से आसानी से कर लेता है। इस कार्य हेतु सहयोगी भी आसानी से मिल जाते हैं।

इस अवसर पर आश्रम के प्रवेश द्वार पर एक दैनिक चिकित्सालय व सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन भी हुआ जिसकी आर्थिक जिम्मेवारी श्री आर.के. गोयल ने स्वीकार की। नवदम्पति को उनके सुखी व सफल जीवन के लिये उपाध्यक्ष श्री कृपाप्रसाद सिंह जी व अखिल भारतीय खेलकूद प्रमुख श्री शक्तिपद ठाकुर ने आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम संयोजक श्री राजेश अग्रवाल, श्री कमल पुगलिया, श्री सत्यनारायण गोयल व इनकी टोली ने सम्पूर्ण कार्यक्रम की व्यवस्था की। ■

हर्षोल्लास से मनाया गया श्रीरामनवमी उत्सव

- तारा माहेश्वरी

श्रीराम का जन्मोत्सव यानि जन-जन के हर्षोल्लास का दिन। हमारी भारतीय संस्कृति के प्रणेता, संवर्धक श्रीराम यहाँ के कण-कण में रचे बसे हुए हैं। युगों पूर्व मानव जीवन के आदर्श पुरुषोत्तम श्रीराम का अवतरण चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी को हुआ था, पर वे आज भी उसी जीवंत रूप में हमारे मानस में विराजमान हैं।

हमारी संस्कृति कर्म सिद्धांत पर आधारित है जिसके नायक श्रीराम हैं। राज्य का त्याग कर अपने जीवन के स्वर्णिम 14 वर्ष वनों में बिताकर उन्होंने समरसता का अनुपम संदेश दे दिया। पूर्वांचल कल्याण आश्रम श्रीराम के प्रिय वनवासी समाज के साथ जुड़ने का एक सेतु है। श्रीराम के आदर्शों के अनुरूप कोलकाता एवं हावड़ा महानगर की सभी समितियां विभिन्न आयोजनों द्वारा प्रभु श्रीराम का स्मरण करते हुए अपनी विनयांजलि समर्पित करती हैं। सभी समितियों द्वारा सुरुचिपूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं। नृत्य, नाट्यमंचन, भजन, गीत, प्रश्नोत्तरी, सुन्दरकाण्ड एवं हनुमान चालीसा का पारायण, बच्चों द्वारा रामायण के पात्रों की प्रस्तुति (फैन्सी ड्रेस) आदि कार्यक्रमों द्वारा वनवासी सेवा की प्रेरणा दी जाती है। प्रत्येक समिति अपने कार्यक्रम में कल्याण आश्रम की भूमिका एवं प्रासंगिकता पर वक्तव्य का भी अनिवार्य रूप से आयोजन करती है ताकि अधिकाधिक लोग इस पवित्र सेवा कार्य से जुड़ सकें। इस वर्ष 17 स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें दक्षिण नगर समिति एवं बालीगंज समिति द्वारा किये गये कार्यक्रम विशेष रूप से चर्चित एवं प्रशंसित हुए। अलीपुर समिति ने बिड़ला एकेडमी सभागार में सम्पूर्ण रामायण का मंचन किया जिसमें राम की भूमिका में अनिता बंका, सीता की भूमिका में रमा गर्ग एवं लक्ष्मण की भूमिका सरिता लोहिया, हनुमान की भूमिका में नैना मूंदड़ा एवं केवट की भूमिका में कमलाजी अग्रवाल ने दर्शकों का मन मोह लिया। इनकी भाव भंगिमा देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों हम त्रेता युग में ही पहुंच गये हैं। पूरा हॉल दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था। कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए लगभग 20-25 दिन पूर्वाभ्यास किया। बालीगंज समिति ने श्रीरामनवमी का आयोजन श्रीमती रंजना खेतान के घर-आंगन में किया किन्तु साज सज्जा देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हम किसी खुले सभागृह में बैठे हैं। केवट बनी सुधा केडिया ने **'मेरी छोटी सी है नाव'** भजन पर एवं शबरी के रूप में शारदा लाखोटिया ने भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

राममन्दिर महिला एवं बड़ाबाजार समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित रामनवमी उत्सव ने एक अनूठा प्रयोग किया गया। बस्ती (स्लम) के 15 बच्चों को एकत्रित कर उनके द्वारा रामायण के विभिन्न पात्रों की प्रस्तुति दिलवाई गयी। एक बालक ने बहुत सुमधुर कण्ठ से गणेश वन्दना प्रस्तुत की। सभी बालक कार्यकर्ताओं के स्नेह स्वरूप मिठाई एवं पुरस्कार पाकर प्रफुल्लित हो गए एवं अगले कार्यक्रम में अधिक सुन्दर प्रस्तुति देने का मन बनाकर गए। राममन्दिर समिति की कर्मठ कार्यकर्ता श्रीमती नीरजा निगानिया के प्रयासों से यह नवीन प्रयोग संभव हो सका।

प्रतिवर्ष की भांति बागबजार पुरुष एवं कुम्हारटोली महिला समिति की कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ मिलकर रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इसबार उनका 20वां रक्तदान शिविर था। कार्यकर्ताओं सहित 120 लोगों ने रक्तदान किया।

सभी समितियों के कार्यक्रम प्रेरणादायी एवं वनवासी सेवा का संदेश देने में सफल रहे। ■

वनवासी कल्याण आश्रम, अंदमान द्वारा 100 सोलर होम लाईटिंग सिस्टम का वितरण

- राम कुमार सिंह, सचिव, व.क.आश्रम, मायाबंदर, अंडमान

वनवासी कल्याण आश्रम और अंडमान साई सेवा समिति के सहयोग से एक विशेष कार्यक्रम **चलो जलायें दीप वहां, जहां अभी भी अंधेरा है** नाम से 14 मई, 2017 को जिला परिषद सभागार, मायाबंदर, उत्तर अंडमान में आयोजित किया गया, जिसमें 100 सोलर होम लाईटिंग सिस्टम का वितरण मायाबंदर, उत्तर अंडमान के सुदूर वनांचल में रहने वाले वनवासी बंधुओं को किया गया, जिससे वनवासी बंधुओं के जीवन में प्रकाश लाया जा सके।

वनवासी कल्याण आश्रम और अंडमान साई सेवा समिति द्वारा जरूरतमंदों और योग्य छात्रों को उनकी शिक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये, आधारभूत सुविधाओं के लिये सूदूरवर्ती वनवासी गांवों में सोलार होम लाईटिंग सिस्टम 100 परिवार को वितरित किया गया ताकि वनवासी बंधुओं के जीवन में समय की मांग के साथ परिवर्तन आ सके और समाज की मुख्य धारा में अलग-थलग न रह जाये।

इस विशेष अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. अमिता भिड़े - मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अस्पताल, मायाबंदर, उत्तर अंडमान मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा सेवा, दया भाव से नहीं की जानी चाहिये, सेवा में बंधु भाव होना चाहिये। इस अवसर पर उपस्थित श्री विजय मोहंती जी, सहक्षेत्रीय संगठन मंत्री, अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम ने कल्याण आश्रम और विविध संगठनों द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों के बारे में बताते हुये कहा कि वनवासी कल्याण आश्रम केवल सेवा कार्य नहीं करता बल्कि वनवासी समाज के संगठन में भी लगा हुआ है। परम पूज्य स्वामी प्राणरुपानंदजी ने उपस्थित जनों को आशीर्वचन देते हुये कहा कि वनवासी समाज स्वाभिमानी है और वे धर्म की रक्षा में सदैव तत्पर रहें हैं, इसलिये संपूर्ण समाज में एकात्म भाव जागृत हो क्योंकि वनवासी अपने बारे में नहीं अपनों के बारे में सोचता है और उनकी उन्नति के बारे में सारे समाज को सोचने की आवश्यकता है। इस मौके पर श्री एतवा बड़ाईक ने सभी गांव वालों की ओर से कल्याण आश्रम के इस कदम की सराहना करते हुये कहा कि वनवासी कल्याण आश्रम एक ऐसी संस्था जिसने हम लोगों के बारे में सोचा और काम कर के दिखाया और यह भी कहा कि सौर ऊर्जा की सुविधा और लोगों को भी मिलनी चाहिये।

श्रीबालाकृष्णाजी, बोर्ड सदस्य, अंडमान साई सेवा समिति ने साई सेवा समिति द्वारा अंडमान निकोबार दीप समूह में चलाये जा रहे विभिन्न सेवा प्रकल्पों और समय-समय पर आयोजित हो रहे कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी दी तथा श्रीवेंकटरमणा, साई सेवक, अंडमान साई सेवा समिति ने यह जोर देते हुये कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारियों का बोध होना चाहिये जिससे समाज के कमजोर तबके का उत्थान हो सके।

उपरोक्त कार्यक्रम का समग्र संचालन श्री रामकुमार सिंह, सचिव-वनवासी कल्याण आश्रम, मायाबंदर ने किया तथा कार्यक्रम का समापन श्रीजगतराम बड़ाईक, कोषाध्यक्ष, वनवासी कल्याण आश्रम (मायाबंदर) द्वारा मुख्य अतिथि, आमंत्रित पदाधिकारी, लाभान्वित गांववासी और शुभ चिंतकों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। ■

सुन्दरवन में निर्माण कार्य प्रगति पर

सुंदरवन (जिला: दक्षिण 24 परगना) दूरदराज के नदी किनारे गांवों का समूह है, जो बंगाल की खाड़ी में बंगलादेश तक फैला है।

सुंदरवन में वनवासी कन्याओं के लिए सामान्य बात है कि उन्हें सुरक्षा की दृष्टि से अपनी शिक्षा से समझौता करना पड़ता है। अधिकांशत: घर एवं विद्यालय के बीच बहुत दूरी होती है एवं मार्ग में अपराधियों एवं वन्य पशुओं की बहुलता से बालिकाओं की अस्मिता एवं जीवन पर खतरा मंडराता रहता है। अत: उन बालिकाओं के पास घर में ही बैठे रहने के अलावा और कोई मार्ग नही होता। इन विषम परिस्थितियों के कारण वे शिक्षा से वंचित रह जाती हैं।

समस्या के समाधान हेतु पूर्वांचल कल्याण आश्रम ने 2012 में गोसाबा ब्लॉक के बेलतली ग्राम में एक किराये के मकान में मात्र 12 बच्चियों के साथ बालिकाओं का छात्रावास प्रारंभ किया। गोसाबा ब्लॉक चारो तरफ से नदियों से घिरा हुआ है। अत: गोसाबा जाने के लिए नदी को पार करना आवश्यक है।

छात्रावास का नामकरण प्रमुख बंगाली क्रान्तिकारी बालिका ''**प्रीतिलता**'' के नाम पर किया गया जिसने अंग्रेजी शासन को ललकारा था एवं उनसे संघर्ष करते हुए शहीद हो गई थी। शीघ्र ही छात्रावास की मांग बढ़ती गयी एवं 2014 तक कुल 35 बालिकाओं को ही हम स्थान दे पाए। बड़े छात्रावास की आवश्यकता शिद्दत से महसूस की जा रही थी ताकि कम से कम 100 बालिकाओं के लिए शिक्षा सुलभ हो।

2014 में हमने चार बीघा का एक भूस्थल उसी ग्राम में ख़रीदा जिस पर 100 बालिकाओं हेतु छात्रावास का निर्माण किया जा सके एवं खेल का मैदान, जलाशय, एवं व्यवसायिक शिक्षा केंद्र को भी उचित स्थान मिल सके। निर्माण कार्य 2016 में आरंभ हुआ एवं मुख्य छात्रवास का भवन इस वर्ष के अंत तक पूर्ण होने की संभावना है। चार विभिन्न भवनों के निर्माण की योजना है जो इस प्रकार होंगे-

- *चार कमरों का एक कार्यालय जिसमे अतिथि भवन भी हो ताकि छात्रों के परिजन जो दूर से आते हैं एवं उसी दिन नही जा पाते, वहाँ रुक सकें।*
- *व्यवसायिक शिक्षा स्थल (सिलाई, कंप्यूटर आदि) एवं प्राथना स्थल।*
- *मुख्य छात्रावास भवन*
- *रसोई सह भोजन कक्ष*

सम्पूर्ण निर्माण की लागत करीब ढाई करोड़ रूपये होगी। एक कक्ष (350 वर्ग फीट) की लागत करीब 4 लाख रुपये आयेगी। इसके अलावा शौचालय, बरामदा, सामान्य स्थान, इत्यादि पर अलग से खर्च है। 100 वर्ग फीट के निर्माण में 1,21,000/- की अनुमानित लागत है। एक लाख से अधिक के दानदाता का नाम प्रमुखता से परिसर स्थल में लिखा जायगा। पूर्वांचल कल्याण आश्रम के सभी दान आयकर की धारा 80 जी. के अन्तर्गत कर मुक्त हैं।

हम इस निर्माण हेतु सामाजिक सहायता पर मुख्यत: निर्भर हैं। ■

युवा समिति द्वारा वृक्षारोपण

कल्याण आश्रम की युवा समिति द्वारा एक दिवसीय वृक्षारोपण कार्यक्रम गत 25 जून को खड़गपुर के निकट पाथरहुड़ी एवं आस-पास के गाँवों में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में फलों के 270 पौधे लगाये गए जिसमें कोलकाता-हावड़ा महानगर के 50 युवाओं ने उल्लासपूर्वक भाग लिया।

GST विषय पर विचार गोष्ठी

गत 18 जून उत्तर-पूर्व नगर द्वारा GST विषय पर प्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री सज्जन सराफ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसे श्री अरुण अग्रवाल C.A. नें सम्बोधित किया। उन्होंनें श्रोताओं के प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं का भी समुचित समाधान दिया। गोष्ठी में शताधिक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

इनरव्हील क्लब द्वारा प्रान्त महिला प्रमुख अच्चम्मा सम्मानित

- कौशल्या रविन्द्र हेगड़े

दुनिया में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपना स्वार्थ छोड़कर समाज बंधुओं की सेवा में अहर्निश जुटे हैं। ऐसी ही आंध्रप्रदेश की प्रान्त महिला प्रमुख श्रीमती अच्चम्मा राममूर्ती को विश्व महिला दिवस पर वनवासी कल्याण आश्रम के स्नेहसंध्या ट्रस्ट और इनरव्हील क्लब द्वारा सम्मानित किया गया। आदरणीय श्रीधरजी की प्रेरणा से मात्र 18 वर्ष की अल्पायु में वे 1978 में कल्याण आश्रम की पूर्णकालिक कार्यकर्ता बनीं। किन्तु 3 वर्ष बाद विवाह होने के कारण उन्हें घर वापस लौटना पड़ा। सांसारिक जीवन के कारण पहले जितना काम करना संभव नहीं था। उनके दो पुत्र हुए और उनमें से एक विकलांग होने के कारण उसकी ओर बहुत ध्यान देना पड़ता था। फिर भी उसमें समय निकालकर वह भजन के कार्यक्रम के लिए गांवों में जाती थीं। 7-8 वर्ष बाद अपंग बच्चे की मृत्यु और पति का भी निधन दोनों अतीव दु:ख के प्रसंगों ने मानो उनकी परीक्षा ही ली। अब वृद्ध माता की सेवा करने का जिम्मा उसी पर आया। कुछ समय बाद माता का भी देहावसान हुआ। इसी प्रकार एक के बाद एक विपदाओं का आना और फिर भी अपने बेटे रामगोपाल बाबू को पढ़ाने का उसने बीड़ा जो उठाया था, उसे वह पूरा कर रही थी। जीवन में आई प्रतिकूलता को उसने अवसर मानकर फिर से पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन काम करना प्रारंभ किया। पिछले 5 वर्षों से वह मठ के कन्या छात्रावास की सम्पूर्ण व्यवस्था देख रही हैं। भगवान ने अच्चम्मा को आशीर्वाद के रूप में कोयल सा कण्ठ दिया है, महिला जागृति के कार्य में उसके माध्यम से भजन गाती है और प्रांत भर में प्रवास भी कर रही है। वनवासी बंधुओं की सेवा में समर्पित इस महिला का विशाखापट्टनम में स्नेहसंध्या और इनरव्हील क्लब द्वारा सम्मान होना अपने आप में एक सेवाव्रती का सम्मान है। अनेक लोग उनकी सेवा भावना एवं समर्पण भाव से प्रेरणा ले रहे हैं। ■

युवा समिति का साक्षरता अभियान

- शशि मोदी

"विद्यादान जीवनदान के समान है। ज्ञानदान कभी व्यर्थ नही जाता" - आचार्य तुलसी के इस कथन को युवा समिति चरितार्थ करने में जुटी है। साक्षरता अभियान के अन्तर्गत विगत 1 जून से 10 जून तक दक्षिण बंगाल प्रान्त से 8 छात्रावासों से कक्षा 9 एवं 10 के 54 छात्र कल्याण भवन में अंग्रेजी एवं गणित का विशेष प्रशिक्षण लेने आए थे। प्रात: 7 से 10 बजे तक गणित तथा 11 से 1 बजे तक अंग्रेजी की शिक्षा दी जाती थी। शिक्षण कार्य कार्यकर्ताओं एवं उनके बच्चों द्वारा ही किया जाता है। बालकों का उत्साह देखकर ऐसा लगता है कि वे 10 दिनों के समय का पूरा-पूरा लाभ ले रहे हैं। करीब 50 प्रतिशत विद्यार्थी शीघ्र ही आत्मसात करने में समर्थ थे पर कुछ बच्चे अपने विषयों में कमजोर थे। एक छात्र संजय गणित में बेहद कमजोर था किन्तु हमारे युवा कार्यकर्ताओं की मेहनत ने उसे उस विषय में अव्वल बना दिया। एक शिक्षिका तन्वी अग्रवाल नें वनवासी बच्चों के अध्यापन का अपना अनुभव इस प्रकार लिख भेजा- "मुझे लगा बच्चे बहुत आगे बढ़ सकते हैं। मैं चाहती हूँ कि मैं उनकी अच्छी पथ प्रदर्शक बनूं।" सामान्य पढ़ाई के अलावा भी संध्या 4 बजे से 6 बजे तक उनकी आर्ट ऑफ लिविंग कक्षाएं चलती थी जिनमें उन्हें ध्यान, योग इत्यादि का प्रशिक्षण दिया जाता था। Adore India वालों ने भी उनमें आत्मविश्वास जागृत करने के लिए उनको तरह-तरह के खेल, नृत्य व गीत सिखाए। उन्हीं के प्रयासों से इन्हीं छात्रों ने अन्तिम दिन एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसका संचालन उसी वनवासी छात्र संजय ने सफलतापूर्वक किया जो प्रथम दृष्टया अन्तर्मुखी तथा औसत दर्जे का प्रतीत हो रहा था।

एक महानुभाव ने सभी बच्चों को शिक्षण सामग्री के रूप में ABTA प्रदान की। अन्तिम दिन बालकों को मेट्रो रेल में भ्रमण कराया गया। कुल मिलाकर बच्चे यहां से नया जज्बा और नई ऊर्जा लेकर लौटते हैं। ■

सिलाई प्रशिक्षण : स्वावलम्बन की डगर पर आरोहण

- विद्या खेमका

परिवर्तन के इस युग में महिलाएं निरन्तर स्वावलम्बन की डोर थामे अग्रसर हो रही हैं तो महानगर महिला अध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला बागड़ी के मानस में सहज रुप से यह प्रश्न उठा - "क्यों न हम भी वनवासी महिलाओं एवं बालिकाओं को स्वावलम्बी बनाकर जीवन जीने की एक नई दिशा की राह दिखायें"? निरन्तर बैठकों एवं वनवासी क्षेत्रों से सम्पर्क कर यह निर्णय लिया गया कि यदि हम लगातार 15 दिनों तक उन क्षेत्रों में नहीं रहे तो क्या हुआ। उन वनवासी कन्याओं एवं महिलाओं को कल्याण भवन में बुलाकर प्रशिक्षित तो कर ही सकते हैं।

इसी सोच को कार्य रूप में साकार करने में किरण मंत्री एवं मैंने शकुन्तलाजी के साथ सम्पूर्ण रूप से संभालने का दायित्व लेकर सिलाई-कढ़ाई के कार्य में वनवासी क्षेत्रों से महिलाओं को बुलाकर प्रशिक्षण देने का प्रकल्प प्रारंभ किया। एक बार में 15-20 महिलाओं को सुन्दर जीवन जीने के साथ-साथ काम काज का प्रशिक्षण दिया जाता है। इन महिलाओं की दिनचर्या सुबह 5 बजे से शुरू होती है- 7 बजे योग कक्षा के पश्चात् साफ सफाई रखने का, भोजन बनाने की विधियां सिखाई जाती हैं। दोपहर में सिलाई का कार्य सिखाने का कार्य शिक्षिका द्वारा विधिवत् सिखाया जाता है। प्रत्येक बालिका को लगभग 20-25 मीटर कपड़ा दिया जाता है जिससे वे समीज, फ्राक, बाबासूट, पेटीकोट, पायजामा आदि उपयोगी चीजें बनाना सीखती हैं।

कभी-कभी बहुत ही भावुक दृश्य हमारे सम्मुख उपस्थित हो जाते हैं। आरती का प्रशिक्षण चल रहा था कि गांव से फोन आया कि उसकी मां बीमार है उसे भेज देवें। वह बालिका तो रोने लगी-दीदी, मैं जाना नहीं चाहती पूरा कोर्स करूंगी तभी आऊँगी। मैं घर जाकर काम करके ही मेरे परिवार का पालन पोषण कर सकूंगी। उसके पिता से अनुनय कर उसे यहाँ रखा तो उसकी आंखों की चमक ही नई रोशनी के आगमन को बयां करने लगी।

सभी के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए डॉक्टर द्वारा उनका परीक्षण कराकर उन्हें महीने भर की दवाईयां दी जाती हैं। स्वस्थ तन ही मन को विकास के कार्य से जोड़ सकता है।

सभी महिला समितियों का आभार प्रकट करती हूँ जो शाम के समय उन सभी के लिए नाश्ता का प्रबंध करती हैं। बालिकाएं जब सिलाई सीखकर अपने घरों को लौटती हैं तो ऐसा लगता है कि बेटी को ससुराल को भेज रही हूँ। 15 दिन लगातार उनके साथ रहने के कारण सहज ही सभी बालिकाओं के साथ भावात्मक लगाव हो जाता है। ■

रांची में शुरु हुआ जनजाति विधिक सहायता केंद्र

डॉ अम्बेडकर जयंती के अवसर पर 14 अप्रैल 2017 के दिन वनवासी कल्याण केन्द्र द्वारा आरोग्य भवन परिसर-राँची में जनजाति विधिक सहायता केन्द्र का उद्घाटन माननीय मिथिलेश प्रसाद (अवकाश प्राप्त सरकारी अधिकारी) एवं प्रणय दत्त (क्षेत्रीय नगरीय कार्य प्रमुख,वनवासी कल्याण केन्द्र) ने भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करते हुए किया गया। इस केन्द्र का उद्देश्य राँची जिला सहित झारखण्ड की 32 जनजातियों के बीच विधिक सहायता एवं न्याय व्यवस्था को नि:स्वार्थभाव से प्रदान कराना है। अपने जनजाति बन्धुओं के बीच शिक्षा, आरोग्य सेवा, रोजगार, आर्थिक विकास जैसे क्षेत्रों में वनवासी कल्याण केन्द्र कई वर्षों से कार्यरत है। अभी इस सहायता केन्द्र के कारण एक नवीन दालान खुल गया जिससे जनजाति समाज को लाभ होगा। इस अवसर पर आर.के. तिवारी, लक्ष्मण कुमार शर्मा, शंकर टोप्पो, निर्मल विशाल आनंद, कई अधिवक्ता सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित थे। ग्रामीण जनों की उपस्थिति भी सविशेष रही। ■

निबंध प्रतियोगिता में रायपुर की अमिषा मिंज पुरस्कृत

हिन्दू अध्यात्मिक और सेवा फाउण्डेशन रायपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा आयोजित निबंध स्पर्धा में वनवासी विकास समिति संचालित, शबरी कन्या छात्रावास की कक्षा 10वीं की बालिका कु अमिषा को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। रायपुर के बी.टी.आई. ग्राउण्ड पर आयोजित इस खेल एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम में 100 विद्यालय सहभागी हुए थे, जिसमें अमिषा ने 'मेरा विद्यालय स्वच्छ विद्यालय' इस विषय पर अपना निबंध प्रस्तुत किया था। सभी ने अमिषा का अभिनंदन किया।

योजना बैठक सम्पन्न

गत 31 मई को कोलकाता महानगर की योजना बैठक कल्याण भवन में क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री बिंदेश्वर जी साहू की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। महानगर मंत्री श्री संदीप जी चौधरी एवं संगठन मंत्री श्री महेश जी मोदी ने गत वर्ष के आय-व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। सभी समितियों ने अपना वृत्त निवेदन करते हुए आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी। इस अवसर पर नवीन दायित्वों की भी घोषणा की गई। अखिल भारतीय नगर प्रमुख श्री शंकरजी अग्रवाल ने कार्यकर्ताओं को कल्याण आश्रम के ईश्वरीय कार्य के साथ मनप्राण पूर्वक जुड़ने का आह्वान करते हुए अधिकाधिक समय दान एवं परिवार सम्पर्क का मार्ग सुझाया। मुख्य वक्ता श्री बिंदेश्वर जी साहू ने समरसता को आज के समय का युगधर्म बताते हुए कार्यकर्ताओं में सम्पूर्ण निष्कपटता, पवित्रता एवं लक्ष्य के प्रति समर्पण की आवश्यकता पर बल दिया। हावड़ा महानगर की योजना बैठक 11 जून को नवीन कार्यालय में हुई जिसमें 70 से अधिक महिला-पुरुष कार्यकर्ताओं ने उपस्थित होकर कार्य को तीव्र गति से बढ़ाने हेतु विचार विमर्श किया। ■

अमृत वचन

इस 'भूमि' और 'जन' का माता और पुत्र जैसा संबंध होना राष्ट्र के लिए अनिवार्य है।

''जो स्वयं को पुत्र रूप अनुभव नहीं करते, जो रहते तो इस भूमि पर हैं, किन्तु जिन्हें सपने अन्य किसी भूमि के आते हैं, जिनके श्रद्धा-केन्द्र इस भूमि के बाहर हैं या जो इस भूमि के बाहर से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। ऐसे सब लोग इसी भूमि की जलवायु में जन्मे, पले और बढ़े हुए होने पर भी 'जन-जन' से कटे हुए हैं। उन्हें भी जब तक भूमि की ममता से एकरस नहीं किया जाता, तब तक वे विघातक तत्व ही कहलाएंगे।'' *- पंडित दीनदयाल उपाध्याय*

शोक संवाद

प्रसिद्ध समाजसेवी व कर्मयोगी पुष्कर लाल केडिया का 29 अप्रैल को देहावसान हो गया। वे 89 वर्ष के थे। '**ज्यों की त्यों धर दिन्ही चदरिया**' वाला दोहा पुष्कर लाल जी पर चरितार्थ रहा। अपने जीवन में उन्होंने अपने ऊपर कोई दाग नहीं लगने दिया। उनके कार्यों की मिसाल आने वाले समय में युगों तक दी जायेगी। स्वास्थ्य, शिक्षा, समाजसेवा, धार्मिक, किसी भी क्षेत्र को उन्होंने नहीं छोड़ा था। जो भी क्षेत्र चुना उसी में रम गये। कई पुस्तकों की भी उन्होंने रचना की। वे हमेशा ही दबे कुचलों की आवाज बनकर सामने आये। बड़तल्ला स्ट्रीट स्थित श्री विशुद्धानन्द अस्पताल का तो उन्हें पर्याय माना जाता था। वे मनीषिका, मातृमंगल प्रतिष्ठान, स्काउट, नागरिक स्वास्थ्य संघ जैसी कई संस्थाओं से तो जुड़े ही थे। लगभग 2 वर्ष पहले पुष्करलाल जी के उद्यम से एक साथ 24 प्रकल्पों का श्रीगणेश बागनान स्थित अग्रसेन धाम में कराया गया था। बाद में उनके शरीर का आधा हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया था, लेकिन उन्होंने अपनी इस शारीरिक कमजोरी को ही अपनी शक्ति बना ली थी। वे कहते थे कि मेरा एक हाथ नहीं है, पर मैं एक हजार हाथ तैयार करुंगा। महात्मा गांधी रोड स्थित केड मंदिर के प्रति उनकी गजब की आस्था थी। पुष्करलाल जी अजातशत्रु थे। उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती थी। शारीरिक परेशानियों के कारण उन्हें व्हील चेयर पर आवागमन करना होता था, लेकिन वे कभी दयनीय भाव नहीं रखते थे। वे सामाजिक संगठनों में एकरूपता तथा जरुरतमन्द लोगों तक अधिकाधिक सेवा पहुंचाने के हिमायती थे। उनका अंतिम संस्कार नीमतल्ला घाट में सम्पन्न हुआ।

●●●

काकुड़गाछी महिला समिति की सक्रिय समर्पित कार्यकर्ता श्रीमती मंजु चमड़िया का गत 16 जून 2017 को देहावसान हो गया। वे बहुत ही सरल और मृदुभाषी महिला थी।

कल्याण आश्रम परिवार दिवंगत आत्माओं के प्रति अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

संत ईश्वर सेवा सम्मान हेरिटेज फाउंडेशन को मिला

हेरिटेज फाउंडेशन राष्ट्रीय एकता, जनजाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के सर्वांगीण विकास के लिए सुदीर्घ समय से कार्य कर रही है। जनजाति, परम्पराओं और उनके सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जन-जागरण करते हुए महान हिन्दू सभ्यता से उसके सह-सम्बन्धों का स्मरण कराना हेरिटेज फाउंडेशन का मुख्य कार्य है। संस्थान ने नागालैंड, मिजोरम, मेघालय जैसे सीमावर्ती प्रदेशों में अन्य धर्मियों की बहुलता के बीच हिन्दू धर्म और सनातन परम्पराओं का जिस प्रकार से संरक्षण किया है, वह अत्यंत प्रशंसनीय है। देश के संवेदनशील उत्तर पूर्वी भाग में जिस प्रकार से देश प्रेम की बात करके विद्रोही वर्ग और अलगाववादियों की चुनौतियों को समुचित उत्तर देते हुए संस्था ने कार्य किया है, उसकी प्रशंसा करते हुए संत ईश्वर फाउंडेशन की ओर से संस्था को सेवा सम्मान से सम्मानित किया जा रहा है। हमारी कामना है कि हेरिटेज फाउंडेशन इसी प्रकार साहसिक कार्य करते हुए सनातन धर्म की ध्वजा को फहराने में समर्थ रहे। ■

वनवासी कल्याण आश्रम को आदिवासी सेवा संस्था पुरस्कार

महाराष्ट्र सरकार के आदिजाति विभाग ने जनजाति क्षेत्र में कार्यरत सेवा संस्था के रुप में वनवासी कल्याण आश्रम को 'आदिवासी सेवा संस्था पुरस्कार' देकर सम्मानित किया। 27 मार्च 2017 को नाशिक के कालिदास सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में राज्य के जनजाति कार्य मंत्री विष्णु सावरा ने एक सम्मान पत्र और 1 लाख रुपये की राशि प्रदान की।

बोधकथा .....

बगुला भगत

एक बार मर्यादा पुरुषोत्तम राम अपने भाई लक्ष्मण के साथ वन में कहीं चले जा रहे थे। तभी रास्ते में एक सरोवर आया। उसके पास राम की नजर एक पक्षी पर पड़ी। वह एक बगुला था। बगुला बड़ी मंद-मंद गति से चल रहा था। जैसे कोई संत अपना पथ देखते हुए चल रहे हों। यह देखकर राम ने लक्ष्मण से कहा, 'देखो तो लक्ष्मण, योगीराज कैसे चल रहा है। मानो वह परम धार्मिक हो। चलते समय वह अपने पांव कितनी सावधानी से रख रहा है। कहीं उसके पांव के नीचे दबकर कोई जीव मर न जाए। वास्तव में यह कोई बड़ा संत हृदय पक्षी लगता है। बगुले की प्रशंसा में राम अपने भाई से कुछ न कुछ कहे जा रहे थे। तभी सरोवर से एक आवाज आती सुनाई दी। स्वाभाविक था कि राम का ध्यान उस ओर जाता। यह आवाज एक मछली का लग रही थी। वह कह रही थी, 'अरे ओ दुग्ध हृदय राम। जैसे तुम्हारा दिल दूध जैसा सफेद है, वैसा ही तुम उस बगुले को भी देख रहे हो। बगुले की उज्ज्वलता तो ऊपरी है। उसके भीतर की रहस्य भरी बातें तुम क्या जानो। ये बातें तो वे ही जान सकते हैं, जो आस पास ही रहते हों। तुम्हारे इस उज्ज्वल वेशधारी ने मेरा वंश चुन-चुन कर समाप्त कर दिया है। उसकी इस साधना का रहस्य जानना हो तो मुझसे जानिए।' राम को बगुले की गति का अर्थ मालूम हो गया था। ■

कविता .....

संकल्प तो करो

- आचार्य स्वामी श्रीधर्मेन्द्र महाराज

नैराश्य को हटाने, संकल्प तो करो।
दुर्भाग्य को मिटाने, संकल्प तो करो।

मत लो किसी से भिक्षा, इतिहास से लो शिक्षा
लेने समर की दीक्षा, संकल्प तो करो।

सौ कोटि सुत है जिसके, वह शोक में क्यों सिसके?
सन्तोष हेतु उसके, संकल्प तो करो।

बन मार्तण्ड भारत, होगा अखण्ड भारत,
पावन प्रचण्ड भारत, संकल्प तो करो।

दमकेगा देश अपना, साकार करने सपना,
किंचित पड़ेगा तपना, संकल्प तो करो।

जीएँगे या मरेंगे, जननी का दुख हरेंगे,
संकट को हल करेंगे, संकल्प तो करो।

'मासूम' शुचि हृदय हम, अविचल अडिग, अभय हम,
पाकर रहेंगे जय हम, संकल्प तो करो।

अनुकरणीय

वनवासी कल्याण आश्रम, कोलकाता महानगर के कार्यकर्ता श्री संजय गोयल एवं श्री योगेश गोयल के पिताजी श्री सत्यनारायण गोयल एवं श्रीमती गीता देवी गोयल ने अपने विवाह की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य पर 21 वनवासी भगिनियों के सामूहिक विवाह का आयोजन करने का निर्णय लिया है। यह सामूहिक विवाहोत्सव आगामी गुरुपूर्णिमा रविवार 9 जुलाई को मल्लारपुर (जिला-वीरभूम) में सम्पन्न होगा। ध्यातव्य है कि गोयल परिवार नें 50वीं वैवाहिक सालगिरह के उपलक्ष्य में अन्य कोई भी कार्यक्रम नहीं करने का निर्णय लिया है। गोयल दम्पति ने अनावश्यक फिजूलखर्ची एवं प्रदर्शन की निरन्तर बढ़ती प्रवृत्ति पर लगाम लगाते हुए मानवीय संवेदना का एक अनूठा अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। यह संवेदना ही आज की महाऔषधि है, जो मनुष्य के प्राणों में भावों का संचार कर सकती हैं, प्रेम के पुष्प खिला सकती है। कल्याण आश्रम गोयल दम्पति के आरोग्यपूर्ण दीर्घायुष्य की कामना करता है।

- समाज में जब-जब चेतना का जागरण होता है तब-तब परम्पराओं का एक नवीन रूप परिलक्षित होता है। जोड़ामन्दिर महिला समिति की कार्यकर्ता श्रीमती अल्पना नेवटिया की प्रेरणा से मृत्यु भोज की परम्परा को नवीन आयाम देते हुए एक नई शुरूआत की गई। गत् 26 मई 2017 को श्री अविनाश चन्द्र गनेरीवाल का बनारस में निधन हो गया। अल्पना जी ने उनके पुत्र सोमेश एवं रमेश को वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यों के बारे में बताया। दोनों पुत्रों को वनवासी कार्य-राष्ट्र कार्य है, यह बात अच्छी तरह समझ आ गई। उनकी 12वीं के दिन कराये जाने वाले ब्राह्मण भोज के सकारात्मक विकल्प के रूप में कल्याण भवन में शिक्षा हेतु आए 56 वनवासी बालकों को भोजन करवाया। साथ ही दिवंगत आत्मा की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु वनवासी क्षेत्र में एक जलाशय निर्माण हेतु 25 हजार की राशि भी प्रदान की। कल्याण आश्रम परिवार दिवंगत आत्मा की चिरशान्ति की कामना करते हुए उनके पुत्रों को इस नई पहल के लिए साधुवाद देता है। समाज की जागृति नव निर्माण की ओर अग्रसर हो - यहीं वनवासी कल्याण आश्रम के कार्य की सार्थकता है। ■

ग्राम विकास का संकल्प

- ज्योति गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम ने संपूर्ण भारत में 120 गांवों (24 क्लस्टर) को पूर्ण विकसित करने का संकल्प लिया है। कोलकाता महानगर में 6 क्लस्टर (30 गांव) को पूर्ण स्वावलंबी बनाने का बीड़ा उठाया है। गत 2 वर्षों से इस दिशा में कार्यकर्ता प्रयत्नशील हैं। कार्य को अपेक्षित गति देने हेतु गत 23, 24 मार्च को कोलकाता के कल्याण भवन में इस विषय पर बैठक हुई। महाराष्ट्र से डॉ. गजानन्दजी डांगे एवं 6 क्लस्टर से 15, 16 लोग आए। गांव के लोग गांव में कहाँ पानी, कहाँ खेती की जमीन और क्या-क्या संभावनाएं है, आदि बातों का खाका बनाकर लाए थे। ग्रामवासियों को जंगल से खेती के अलावा और क्या-क्या मिलता है, उन सबकी विस्तृत जानकारी दी गई एवं पुन: सबकी सूची बनाने को कहा गया ताकि सही दिशा में कार्य हो सके। डॉ. गजानन्दजी ने कहा कि ग्रामवासियों का जीवन जंगल के बिना चल ही नहीं सकता।

कल्याण आश्रम के प्रयासों से ग्रामवासी विकास की राह पर आगे बढ़ रहे हैं। आशा है कि गांव में आंगनबाड़ी, एकल विद्यालय के माध्यम से बच्चे शिक्षा प्राप्त करेंगे एवं उन्हें सस्ती बिजली भी उपलब्ध करवाई जाएगी। ■

रामनवमी उत्सव की झलकियाँ

दक्षिण नगर समिति

बालीगंज समिति

मध्य हावड़ा समिति

दक्षिण हावड़ा समिति

उल्टाडांगा समिति

उत्तर हावड़ा समिति

वनवासी संग स्नेह-प्रेम का, जोड़ा प्रभु ने मन का तार।
राम नाम ही है वह सेतु, जोड़े वन को नगर के साथ।।

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com

Printed Matter

Book - Post